B.A - Part - 1 (music)

गायन के घराने एवं विशेषताऐं

गायकी से घराने का निर्माण हुआ। एक गायक ने कुछ शिष्य तैयार किये। इस प्रकार शिष्यों की पीढ़ी चलती गई, जिसे घराना कहा गया। मध्यकाल में देशी रियासतें बन गई जहाँ घरानों का जन्म और विकास हुआ। घरानों से गुरु-शिष्य परंपरा का बहुत गहरा संबंध है। इसे यों कह सकते हैं कि गुरु- शिष्य परंपरा को ही घराना कहते हैं। तानसेन से पूर्व कोई घराना नहीं मिलता। प्रत्येक रियासत में कुछ गायक-वादक हुआ करते थे। जिन्हें राजा का पूर्ण आश्रय मिलता था। वे किसी शिष्य को सीखाने से कतराते थे। थोड़ा बहुत सीखना उस्ताद की सेवा के बाद ही प्राप्त होता था। किसी अन्य गायक को न सुनने की आज्ञा रहती न कहीं बिना उस्ताद के अनुमति के गाने की।

तानसेन के वंशज सेनिये कहलाये जो ध्रुपद तो गाते ही थे, रबाब भी बजाते थे। मुख्यत: सात घराने माने जाते हैं:-

1) ग्वालियर घराना:- स्वर्गीय नत्थन पीरबख्श इस घराने के जन्म-दाता माने जाते हैं।